नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया

पाठ का सार

सन 1857 के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब जब क्रांति में असफल हाकेर भागे तो वे अपनी बेटी मैना को साथ न ले जा सके। मैना कानपुर के पास बिठूर में ही पिता के महल में रहती थी। उसी समय अंग्रेजों के एक दल ने बिठूर पहुँचकर नाना साहब के महल को लूट लिया। अंग्रेज़ सेनापति, 'तोपों के गालों से महल भी नष्ट कर दिया जाए।' ऐसा कह रहा था, तभी एक सुंदर बालिका बरामदे में आकर खड़ी हो गई तथा महल न तोड़ने के लिए अंग्रेज़ सेनापति से निवेदन करने लगी। उस छोटी उम्र की लडक़ी के दुखी चहेरे को दखकर सेनापति को उस पर दया आ गई उसने बालिका से पछूा कि वह महल को क्या ंे बचाना चाहती हैं ? तो बालिका ने सेनापति से प्रतिप्रश्न किया कि वे उस महल को क्या ंे ताडेना चाहते हैं?

सेनापति ने उत्तर दिया कि यह महल विद्रोहियों के नेता नाना साहब का है, अतः इसे नष्ट करने का आदेश मिला है। बालिका ने कहा कि दोषी तो शस्त्रा उठाने वाले हैं। मकान तो जड़ पदार्थ है। इसने तो कोई अपराध् नहीं किया। इसे नष्ट न करिए। यह स्थान मुझे बहुत प्रिय है। इसकी रक्षा कीजिए।

बालिका ने बताया कि आपकी पुत्री मेरी बहुत अच्छी दोस्त थी। जब वह थी तो आप भी मेरे घर आते थे तथा मुझे अपनी पुत्राी जैसा प्यार करते थे। उसकी मृत्यु पर मैं बहुत दुखी हुई थी। उसकी एक चिट्ठी अब तक मेरे पास है।

सेनापति ने मैना को पहचान लिया। वह बोला, मैं महल बचाने का प्रयत्न करूँगा। इसी समय अंग्रेज़ों का प्रधान सेनापति अउटरम वहाँ आया और सेनापति हे से बोला कि नाना का महल अभी तक उड़ाया क्यों नहीं? हे ने कहा कि क्या किसी तरह नाना का यह महल बच सकता है? प्रधान सेनापति ने कहा, 'गवर्नर जनरल की आज्ञा मिलने पर ही बच सकता है, अंग्रेज़ नाना से बहुत नाराश हैं, नाना के वंश तथा महल पर दया दिखाना असंभव है।' सेनापति हे ने कहा, फिर ला ॅर्ड केनिंग (गवर्नर जनरल) को इस विषय का तार दे देते हैं । अउटरम ने कहा कि आप ऐसा क्यों चाहते हैं? हम इस महल को बिना नष्ट किए तथा नाना की लड़की को गिरफ़्तार किए बिना नहीं छोड़ सकते।

सेनापति हे दुखी होकर चला गया। उसके बाद अउटरम ने नाना के महल को घेर लिया। अंग्रेज़ सिपाही फाटक तोड़कर महल के अंदर घुस गए। उन्होंने मैना को बहुत ढूँढ़ा किंतु वह न मिली।

उसी दिन लार्डं केनिगं का तार आया जिसका आशय इस प्रकार था ''लडंन के मंत्रिमडंल का मत है कि नाना के स्मृित-चिहन् तक को मिटा दिया जाए इसलिए वहाँ की आज्ञा के विरुद्ध् कुछ नहीं हो सकता।'' उसी समय क्रूर जनरल अउटरम की आज्ञा से नाना साहब के सुविशाल राजमहल पर गालेाबारी हाने ंे लगी। घटें भर में ही उसे मिट्टी में मिला दिया गया।

उस समय लंडन के प्रमुख पत्र टाइम्स में छपा ''बड़े दुख का विषय है कि भारत सरकार दुर्दांत नाना को नहीं पकड़ सकी। हम अंग्रेज़ जीते-जी अंग्रेज़ नर-नारियों के नरसंहार का बदला लेना कभी नहीं भूलेंगे। सर टामस 'हे' की नाना की बेटी पर दया करने की बात से हँसी आती है। शायद वे बुढ़ापे में उस महाराष्ट्री कन्या के सौंदर्य पर मोहित होकर अपना कर्तव्य भूल गए हैं। नाना की लड़की को 'हे' के सामने फाँसी पर लटका देना चाहिए।

उसी वर्ष सितंबर की आधी रात के समय मैना महल के खंडहरों में बैठी रो रही थी। पास में ठहरी अउटरम की सेना ने उसे पकड़ कर गिरफ़्तार कर लिया। मैना ने अउटरम से जी भरकर रोने की अनुमति माँगी किंतु क्रूर अउटरम को उस पर दया न आई। उसने मैना

को गिरफ़्तार कर लिया और कानपुर के किले में बंद कर दिया। फिर उसे धधकती आग में फेंक दिया गया। मैना जलकर भस्म हो गई।

कठिन शब्दों के अर्थ

1. निरपराध - बिना अपराध के
2. वासस्थान - निवास की जगह
3. विध्वंस - विनाश करना
4. फाटक - दरवाजा
5. भग्नावशिष्ट - अवशेष
6. प्रासाद - महल